ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-10* January-2021
Anthology : The Research

कालिदास के रूपकों में प्रमुख स्त्री–पात्रों की विनियोजना का वैशिष्ट्य

Key Female Characters in Kalidasa's Metaphors Characteristics of The Project

Paper Submission: 12/01/2020, Date of Acceptance: 26/01/2021, Date of Publication: 27/01/2021

सुस्मिता रानी
शोध छात्रा,
संस्कृत विभाग,
बी0 आर0 ए0 बिहार विश्वविद्यालय,
मुजफ्फरपुर, बिहार, भारत

सारांश

महाकवि कालिदास के रूपकों में जिन प्रमुख स्त्री–पात्रों की विनियोजना हुई है उन सभी स्त्री पात्रों का अपना भिन्न ही वैशिष्ट्य है। इस वैशिष्ट्य के कारण ही वे पात्राएँ प्रभावशालिनी बन गई हैं। इतना ही नहीं, उन स्त्री पात्रों के विनियोजन से जहाँ रूपकों की कथा–वस्तु को अग्रसर होने का अवसर मिला है वहाँ घटना–क्रम को प्रस्तुत करने में रूपककार को यथेष्ठ सफलता मिली है। जहाँ तक रूपकों के उद्देश्य की बात है, उनका उद्देश्य उन स्त्री–पात्रों के माध्यम से नारी–मनोविज्ञान का उद्घाटन करना है और पाठकों तथा दर्शकों को आदर्श की प्रेरणा प्रदान करना है।

'मालविकाग्निमित्र' रूपक के अन्तर्गत मालविका प्रथमतः महारानी की नृत्य–संगीतकुशला परिचायिका के रूप में चित्रित की गयी है। वही नारी पात्रों में महारानी धारिणी का चरित्र धारदार है। इरावती अग्निमित्र की छोटी रानी हैं। यह महारानी धारिणी की प्रवृत्ति के बिलकुल विपरीत है। इरावती के चरित्र में ईर्ष्या, मान तथा उतावलापन रेखांकित किया गया है। इरावती प्रगल्भा के गुणों से युक्त है। कौशिकी एक विदुषी पात्र के रूप में अपनी छाप छोड़ती है। इस नाटक के अन्य नारी पात्रों में बकुलावलिका का विशिष्ट स्थान है। इसके साथ–साथ अन्य स्त्री–पात्रों में मधुकरिका, कौमुदिका, समाहितिका, निपुणिका, जयसेना, मदनिका आदि तो केवल कथा की कड़ी जोड़ने तथा कथानक को विस्तार देने में सहायक बनकर रह गये हैं।

'विक्रमोर्वशीयम्' रूपक के अन्तर्गत उर्वशी धीरा, कला–प्रगल्भा और स्वर्वासरी होने के कारण सामान्या है। चित्रलेखा इस 'त्रोटक' की एक प्रभावशालिनी नारी पात्र है। इसका और उर्वशी का घनिष्ठ सम्बन्ध है। नारी पात्रों में औशीनरी को कालिदास ने प्रतिनायिका के रूप में प्रस्तुत किया है। निपुणिका महारानी औशीनरी की दासी है, जो बहुत ही चतुर है। नाटक के अन्य स्त्री–पात्रों में रम्भा, मेनका, सहजन्या, तापसी, यवनी, चेटी आदि का भी काफी महत्त्व है क्योंकि उनसे नाटक की कथा–वस्तु के विकास में सहायता मिली है।

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' रूपक के अन्तर्गत शकुन्तला शील तथा सरलता से युक्त होने के कारण स्वकीया नायिका की श्रेणी में आती है। अनसूया के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता उसका मृदु तथा मितभाषी होना है। नारी पात्रों में प्रियंवदा का चरित्र सबसे भिन्न है। यह नायिका की मुँह बोली सखी है। कालिदास ने गौतमी को कण्व मुनि की धर्म–भगिनी के रूप में इस रूपक में चित्रित किया है। इसके साथ–साथ नाटक के अन्य स्त्री–पात्रों में चतुरिका, परभृतिका, मधुरिका, प्रतिहारी यवनी, सानुमती, अदिति आदि की भी नाटक में महत्त्वपूर्ण भूमिका दृष्टिगोचर होती है।

इस प्रकार कालिदास के रूपकों में प्रमुख स्त्री–पात्रों की विनियोजना का अपना अलग ही उद्देश्य और वैशिष्ट्य है।

In the metaphors of Mahakavi Kalidas, all the female characters who have been appropriated, all the female characters have their own special features. Due to this specialty, those characters have become influential. Not only this, with the appropriation of those female characters, where the story of the metaphors has an opportunity to move forward, the metaphor has had considerable success in presenting the sequence of events. As far as the purpose of metaphors is concerned, their purpose is to inaugurate feminine psychology through those female characters and to provide inspiration to the readers and the audience.

Under the 'Malavikagnimitra' metaphor, Malavika is first depicted as the queen's dance-music actress. In the same female characters, the character of Maharani Dharini is sharpened. Iravati is the younger queen of Agnimitra. This is in sharp contrast to the trend of Maharani Dharini. Jealousy, honor and rapture are underlined in Iravati's character. Iravati has the qualities of Pragalbha. Kaushiki makes his mark as a male character. Bakulavalika has a special place among the other female characters in this play. Along with this, among other female characters, Madhukarika, Kaumudika, Samhitika, Nipunika, Jayasena, Madanika, etc. have only been helpful in adding a link to the story and expanding the plot.

Urvashi Dheera, under the metaphor 'Vikramorvashiyam', is common due to being Kala-Praglabha and Swavasari. Chitralekha is an influential female character of this trotak. It and Urvashi have a close relationship. Amongst the female characters, Aushenari is portrayed by Kalidasa as a protagonist. Nipunika is the maid of Queen Aushenari, who is very clever. Rambha, Maneka, Sahajanya, Taapsee, Yavani, Chetty, etc. are also important among other female characters of the play as they have helped in the development of the story of the play.

Shakuntala, under the metaphor 'Abhigyanasakuntalam', comes under the category of Swakiya heroine because of her modesty and simplicity. The biggest feature of Anasuya's character is her soft and reticent. Priyamvada's character is most different among female characters. This is the heroine's mouth spoken friend. Kalidasa portrays Gautami as the goddess of Kanva Muni in this metaphor. Along with this, among the other female characters of the play, Chaturika, Parbhritika, Madhurika, Pratihari Yavani, Sanumati, Aditi, etc. also have an important role in the play.

Thus, in Kalidasa's metaphors, the appropriation of major female characters has its own purpose and distinction.

मुख्य शब्द : कालिदास के रूपकों में प्रमुख स्त्री–पात्रों के प्रवेश से कथा की श्री–वृद्धि।
The rise of the story by the entry of prominent female characters in Kalidasa's metaphors.

प्रस्तावना

कालिदास के रूपकों में पुरुष और स्त्री दोनों ही पात्रों के समावेश हुए हैं। यहाँ हमारा अभिप्रेत उनके नाटकों में निहित प्रधान स्त्री–पात्रों पर प्रकाश डालना है। जिस प्रकार पुरुष पात्रों की अभिनेयता पर नाटक की सफलता आधृत है उसी प्रकार स्त्री–पात्रों की विशिष्टता की भी अपनी महत्ता है। उन स्त्री–पात्रों के कथन के माध्यम से नारी–मनोवृत्ति भी प्रकट हो जाती है और कथा–सूत्र आगे की ओर बढ़ने लगता है।

अध्ययन का उद्देश्य

कालिदास के रूपकों में स्त्री–पात्रों की इयत्ता का भी अपना महत्त्व है। इसकी अभिनेयता के आधार पर ही नाटक की सफलता दृष्टिगोचर होती है। इसके माध्यम से कालिदास के रूपकों के स्वारस्य को हृदयंगम करने में सहायता मिलेगी।

'मालविकाग्निमित्र' नाटक के अन्तर्गत स्त्री–पात्र–योजना

मालविका

विदर्भराज माधव सेन की भगिनी 'मालविका' को नाटक की नायिका के रूप में प्रस्तुत किया गया है। नाटक के आरम्भ में प्रवेशक के अन्तर्गत प्रेक्षकों को महारानी धारिणी की दो दासियों –– बकुलावलिका और कुमुदिनी के आपसी वार्तालाप से पता लगता है कि वीरसेन द्वारा मालविका को धारिणी के पास भेजा गया है। मालविका प्रथमतः महारानी की नृत्य–संगीतकुशला परिचायिका के रूप में चित्रित की गयी है। मालविका एक भोली–भाली कन्या होने के कारण मुग्धा–सी प्रतीत होती है। वह असाधारण सौन्दर्य–सम्पन्ना है। मालविका एक आदर्श प्रेमिका भी है, वह द्वितीय अंक में गीत के माध्यम से ही प्रणय निवेदन कर लेती है। इसके उपरान्त जब वह चित्रित राजा को वास्तविक समझ कर बकुलावलिका से कहती है कि अपनी दृष्टि फेर कर प्रेमभरी चितवन से ये किसे देख रहे हैं? इससे उसका आदर्श प्रेम प्रकट होता है।

इसमें सन्देह नहीं कि मालविका के रोशाभिनय को मानिनी के स्वरूप में नाटककार ने रेखांकित किया है ––

'भ्रूभंगभिन्नतिलकं स्फुरिताधरोष्ठं सासूयमाननमितः परिवर्तयन्त्या।
कान्तापराधकुपितेष्वनया विनेतुः सन्दर्शितेव ललिताभिनयस्य शिक्षा।।'[1]

यहाँ आंगिक अभिनय के प्रस्तुतीकरण में रोषाभिनय की चेष्टाओं का शास्त्रीय निरूपण किया गया है। मालविका प्रेम की दशा में भूल गयी है कि यह वास्तविक राजा है या नहीं है, यह तो उनका चित्र है।

इतना तो मानना ही होगा कि मालविका का राजकुमारी रूप कई दृष्टि से महत्त्वपूर्ण है। विदिशा में दासी रूप में जीवन व्यतीत करने वाली सुन्दरी को लेकर जो रहस्यपूर्ण अन्तर्द्वन्द्व चल रहा था समाप्त हो जाता है। इसके पूर्व धारिणी का व्यवहार मालविका के प्रति दासी जैसा था।

महारानी धारिणी

'मालविकाग्निमित्रम्' के नारी पात्रों में महारानी धारिणी का चरित्र धारदार है। आयु से प्रौढ़ा तथा अनुभव से परिपूर्ण हैं। राजमहल के अन्तरंग कार्य–व्यापार का संचालन–सूत्र इन्हीं के हाथों में है। इनमें यथा नाम तथा गुण विद्यमान है। धारिणी का आक्रामक चरित्र ही कवच है जिसे उतार देने पर यह नाटक सुखान्त हो जाता है। धारिणी को स्वर्णदान का फल भी ज्ञात है। 'अग्निपुराण' में आया है कि ''पितामह के पुत्र भगवान मारीचि ने कहा है कि जो दान में स्वर्णदान करते हैं उनकी सम्पूर्ण कामनाएँ पूर्ण हो जाती है।'' महारानी की धार्मिक वृत्ति के साथ–साथ पुत्र–प्रेम परिपुष्ट होता है। धारिणी का पुत्र–प्रेम वहाँ भी छलक पड़ा है जब कंचुकी विदर्भराज द्वारा दिया गया उपहार तथा पत्र लेकर राजा के समीप आता है। महारानी के चरित्र में दृढ़ता है। अपने संकल्प के प्रति सतर्क एवं सत्यपथ अनुगामिनी हैं। इसका पुष्टिकरण नाटक के तृतीय अंक में बकुलावलिका के कथन द्वारा हाता है –– मालविका, इरावती द्वारा अपने को राजा के समीप देखे जाने से भयभीत है। इधर तपनीयाशोक पुष्पित हो गया है, इस पर मालविका को सान्त्वना देते हुए बकुलावलिका रानी के स्वभाव का परिचय देते हुए कहती हैं।

इतना ही नहीं, धारिणी के मातृ–हृदय पर टिप्पणी करते हुए डॉ0 रमाशंकर त्रिपाठी ने लिखा है –– 'मातृत्व के उज्वार ने सपत्नियों की श्रेणी–स्फीत को स्वेच्छया कर दिया है; यह कुछ कम महत्त्व की बात नहीं है।'[2]

दूसरी ओर धारिणी के चरित्र के प्रकाशन में उन्हें धीरा प्रगल्भा नायिका की श्रेणी में रखना सर्वथा उपयुक्त होगा। महारानी धारिणी सदैव अग्निमित्र के प्रति आदर–भाव प्रदर्शित करती है। धनंजय ने दशरूपक में धीरा–प्रगल्भा के लक्षण इस प्रकार माना है। धीरा प्रगल्भा अर्वाहत्य (आकार संवरण) तथा आदर प्रदर्शन सहित व्यापार करती है, वह कोप के कारण रति में उदासीन रहती है।[3]

रानी इरावती

इरावती अग्निमित्र की छोटी रानी हैं। यह महारानी धारिणी की प्रवृत्ति के बिलकुल विपरीत है। वह नवयुवती और सुन्दरी है, प्रगल्भा एवं अधीरा है। उनके यौवनमद में ''आसव'' की गन्ध है। इरावती के चरित्र में ईर्ष्या, मान तथा उतावलापन रेखांकित किया गया है। इरावती प्रगल्भा के गुणों से युक्त है। वह यौवन–मद में अन्धी, काम से उन्मुक्त नायिका है। नशे में उन्मुक्त वह अग्निमित्र से मिलने के लिये अधीर होकर शीघ्रता से बढ़ती है, किन्तु पैर बढ़ते ही नहीं वह दोलागृह में पहुँचकर उतावली हो उठती है। यहाँ कालिदास ने उसे प्रगल्भा के रूप में ही प्रस्तुत किया है। कालिदास ने मदिरापान से उन्मत्ता इरावती को संयमविहीन आचरणवाली एक उच्छृंखल नारी के रूप में प्रस्तुत करके विदिशा के शुंग राजमहल की यथार्थ दशा को चित्रित किया है। साथ ही यह भी सिद्ध कर दिया है कि उच्छृंखलता में सौन्दर्य

की विकृति है। सौन्दर्यवती होते हुए भी इरावती का सौन्दर्य विकृत–सा लगता है। वह सुन्दर होकर भी आकर्षण विहीन है।

कौशिकी

कौशिकी की चरित्र–सृष्टि के पीछे नाटककार की एक विशिष्ट दृष्टि भंगिमा क्रियाशील है। कौशिकी का सम्पूर्ण जीवन स्वयं में व्यथा की कथा है। वह विधवा है। उसके चरित्र के साथ विदर्भराज्य से लेकर विदिशा मार्ग की जटिल एवं हृदय–द्रावक परिस्थितियाँ जुड़ी है। कौशिकी एक विदुषी पात्र के रूप में अपनी छाप छोड़ती है। राजा दोनों आचार्यो के विवाद का समाधान विदुषी कौशिकी के समक्ष निर्णय–हेतु रखना चाहता है। महारानी धारिणी भी परिव्राजिका से प्रभावित है। इसलिये वह महारानी से कहती है कि आप अपने पक्ष के पराजय की बात न सोचिये।

बकुलावलिका

इस नाटक के अन्य नारी पात्रों में बकुलावलिका का विशिष्ट स्थान है। वह नाटक के प्रथम अंक में महारानी धारिणी की आज्ञापालक दासी के रूप में प्रेक्षकों के समक्ष यह कहते हुए दिखायी पड़ती है कि देवी की आज्ञा है कि नाट्याचार्य गणदास के समीप जाकर पूछो कि 'छलिक' नृत्य में मालविका ने कैसी प्रगति की है? वह आचार्य के समीप जाकर अभिवादन करके पूछती है कि महारानी यह जानना चाहती हैं कि मेरी परिचायिका और आपकी शिष्या मालविका संगीत शिक्षा को ग्रहण करने में आपको अधिक कष्ट तो नहीं देती? वह गणदास से आज्ञा लेकर मालविका से मिलने तथा उसे यह बताने को भी उत्सुक है कि तुमसे गुरु पूर्ण संतुष्ट और प्रसन्न हैं। यहाँ बकुलावलिका का चरित्र एक आज्ञाकारी दासी का है जो आज्ञा–पालन में सफल है।

अन्य पात्र

अन्य स्त्री–पात्रों में मधुकरिका, कौमुदिका, समाहितिका, निपुणिका, जयसेना, मदनिका आदि तो केवल कथा की कड़ी जोड़ने तथा कथानक को विस्तार देने में सहायक बनकर रह गये हैं।

'विक्रमोर्वशीयम्' नाटक के अन्तर्गत स्त्री–पात्र–योजना :

उर्वशी

इस 'त्रोटक' की नायिका काशीराज की पुत्री 'औशीनरी' नहीं इन्द्र की सभा की शोभा देवांगना उर्वशी है, जो साधारण नारी नहीं अप्सरा है। नाट्य–शास्त्र में अप्सरा को दिव्या की कोटि में रखा गया है। उर्वशी धीरा, कला–प्रगल्भा और स्वर्वासरी होने के कारण सामान्या है। वह नायक के प्रति अत्यन्त अनुरक्त होकर स्वयं अभिसरण करती है, इसलिये उसका एक रूप रक्ताभिसारिका का भी है। यहाँ 'उर्वशी' को कालिदास ने रक्ताभिसारिका के रूप में प्रस्तुत किया है क्योंकि वह काम से पीड़ित होकर स्वयं नायक के पास अभिसरण करती है। उर्वशी इस नाटक की नायिका है। वह दिव्या की कोटि में आती है। भरतमुनि ने नाट्यशास्त्र के अध्याय 2 के श्लोक 24 में नायिकाओं का विवेचन सामाजिक स्तर पर प्रतिष्ठा के आधार पर किया है। दिव्या के लक्षण को स्पष्ट करते हुए लिखा है –– यह मानवी से भिन्न होने के कारण दिव्या की कोटि में आती है। उर्वशी में देवशीला एवं गन्धर्वशीला का मिश्रित रूप दर्शनीय है। वह स्निग्ध अंगों से स्थिर, विशाल आकर्षक नेत्रवाली है। कालिदास ने उर्वशी के सुन्दर एवं विशाल नेत्रों का वर्णन इस प्रकार किया है ––

'गतं भयं भीरु! सुरारिसम्भवं त्रिलोकरक्षी महिमा हि वज्रिणः।
तदेतदुन्मीलय चतुरायतं निशावसाने नलिनीव पंकजम्।।'[4]

उर्वशी अत्यन्त सुन्दरी है उसके रूप को देखकर नाटक के प्रथम अंक में ही राजा कहते हैं ––

'अस्याः सर्गविधौ प्रजापतिरभूच्चन्द्रो न कान्तिप्रदः
शृंगारैकरसः स्वयं नु मदनो मासो नु पुष्पाकरः।
वेदाभ्यासजडः कथं नु विषयव्यावृत्तकौतूहलो
निर्मातुं प्रभवेन्मनोहरमिदं रूपं पुराणो मुनिः।।'[5]

इसमें सन्देह नहीं कि अप्सरा होते हुए भी उर्वशी साधारण प्रेमिका के गुणों से युक्त है। वह एक आदर्श प्रेमिका है। केशी द्वारा अपने अपहरण पर भी कृतज्ञता ज्ञापित करती है।

चित्रलेखा

चित्रलेखा इस 'त्रोटक' की एक प्रभावशालीनी नारी पात्र है। इसका और उर्वशी का घनिष्ठ सम्बन्ध है। नाटक के प्रथम अंक में ही वह उर्वशी के साथ दर्शित है। यह उर्वशी की अन्तरंग सखी है। चित्रलेखा के चरित्र में असाधारण विशेषताएँ उल्लेखनीय हैं।

औशीनरी

'विक्रमोर्वशीयम्' के नारी पात्रों में औशीनरी को कालिदास ने प्रतिनायिका के रूप में प्रस्तुत किया है। यह प्रतिष्ठानपुर के राजा पुरूरवा की प्रधान राज्ञी तथा काशीराज की पुत्री है। इनका चरित्र महारानी पद के अनुरूप है। भले ही नारीगत दुर्बलताएँ उनमें हैं, फिर भी स्वभाव से सौम्य है, शील उनका आभूषण है। वह राजा के चरित्रगत दोषों से परिचित है। वह तेज, पटु तथा ऐश्वर्यशालिनी महारानी है। रानी औशीनरी सरल और शीलवान है। उनके चरित्र में आदर्शवादिता का पुट है। उनके चरित्र में प्रगल्भा धीरा तथा मध्या के लक्षण भी पाये जाते हैं।

निपुणिका

यह महारानी औशीनरी की दासी है, जो बहुत ही चतुर है। महारानी उसकी कुशलता के कारण ही राजा की उदासी का कारण जानने का भार सौंपती है, क्योंकि सूर्योपासना से लौटने के पश्चात् राजा उदासीन से रहने लगते हैं, उसमें नाम के अनुरूप ही गुण है। सचमुच वह बड़ी सरलता से राजा के मन का रहस्य विदूषक द्वारा उगलवा लेती है। इसलिये नाटककार ने उसका नाम निपुणिका रखा है।

अन्य पात्र

अन्य स्त्री–पात्रों में रम्भा, मेनका, सहजन्या, तापसी, यवनी, चेटी आदि का भी काफी महत्त्व है क्योंकि उनसे नाटक की कथा–वस्तु के विकास में सहायता मिली है।

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के अन्तर्गत स्त्री–पात्र–योजना

शकुन्तला

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' 'नायिका' प्रधान नाटक है। इसी नायिका के नाम पर नाटक का नामकरण हुआ है। कालिदास ने उसे मुग्धा नायिका के रूप में सर्वप्रथम

चित्रित किया है। शकुन्तला शील तथा सरलता से युक्त होने के कारण स्वकीया नायिका की श्रेणी में आती है। वह आद्यन्त दुष्यन्त की ही प्रेमिका है। शकुन्तला में अनिंद्य सौन्दर्य है। उद्यान में भ्रमर पुष्प को छोड़कर उसके सुख–मण्डल पर मंडराता है। कालिदास ने उसे पद्मिनी के गुणों से युक्त करके पद्मगन्धा के रूप में प्रस्तुत किया है। शकुन्तला एक आदर्श भारतीय नारी की प्रतीक है। वह अपने अनाघ्रात रूप से लेकर प्रेमातुर दशा में भी आदर्शों से विचलित नहीं होती।

शकुन्तला के चरित्र को उद्घाटित करते हुए ठाकुर रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा –– 'शकुन्तला की सरलता अपराध में, दुःख में, अभिज्ञता में, धैर्य में, क्षमा में परिपक्व है, गम्भीर है और स्थायी है। शकुन्तला में तरुण सौन्दर्य ने मंगलमय परम–परिणति में सफलता लाभ करके मर्त्य को स्वर्ग के साथ सम्मिलित कर दिया है।'[6]

इसमें सन्देह नहीं कि शकुन्तला का प्रेम अप्रतिम है। निसर्ग–कन्या शकुन्तला जो देवलोक की आभा और मर्त्यलोक की प्रतिभा से युक्त है को प्रकृति ने अपने हाथों से संवारा है। अन्तःपुर की सौन्दर्यवती का सौन्दर्य शकुन्तला के सामने फीका पड़ जाता है। वल्कल पहने हुए भी वह अनुपमेय है। नायक उसके सौन्दर्य पर प्रथम दर्शन में ही रीझ उठा है। उसकी मृगया में रुचि नहीं रह गयी है। दुष्यन्त अनसूया तथा प्रियम्वदा के समक्ष शकुन्तला के सौन्दर्य की प्रशंसा करते हुए नाटक के प्रथम अंक में कहते हैं ––

'मानुशीशु कथं वा स्यादस्य रूपस्य सम्भवः।
न प्रभातरलं ज्योतिरुदेति वसुधातलात्।।'[7]

अनसूया

नाटक की नायिका शकुन्तला की सहायिका तथा उसकी प्रिय सखी अनसूया कालिदास के कोमल कल्पना की मंजु–कली है। अनसूया के चरित्र की सबसे बड़ी विशेषता उसका मृदु तथा मितभाषी होना है। वह विचारशील है सोच–समझ कर ही किसी प्रश्न का उत्तर देती है। शंकालु स्वभाव की होने के कारण वह सहसा किसी बात पर विश्वास नहीं करती है। वह आयु में शकुन्तला से थोड़ी बड़ी है। इसीलिये वह अपनी प्रिय सखी की अवस्था तथा मनोदशा का विवेचन बहुत चतुरता एवं शालीनता के साथ करती है। अनसूया कर्तव्यपरायण है। आश्रम धर्म के अनुसार दायित्व निर्वाह का उसे बराबर ध्यान है। वृक्षसिंचन होना चाहिये, अतिथि सत्कार में कमी न होने पाये, इसको उसे बराबर ध्यान है। अनसूया शिष्ट तथा जिज्ञासु है। वह राजा के समीप अपनी दोनों सखियों के साथ बैठती है। अपनी प्रकृति के अनुरूप ही वह अतिथि के सन्दर्भ में जानकारी प्राप्त करना चाहती है।

प्रियंवदा

'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' के नारी पात्रों में प्रियंवदा का चरित्र सबसे भिन्न है। यह नायिका की मुँहबोली सखी है। अनसूया की सहगामिनी होने के साथ ही एक अल्हण व्यक्तित्व के रूप में चित्रित की गयी है। प्रियवंदा अपनी सखी अनसूया की भाँति संकोची प्रवृत्ति की नहीं है। वह बिना संकोच के ही नाटक के प्रथम अंक में दुष्यन्त से कहती है ––'तब तो आप इस घनी छाया से शीतल सप्तपर्ण के तले वाली इस वेदी पर कुछ देर बैठकर अपनी थकान दूर करें।' इस कथन में प्रियंवदा की चपलता और विनोदप्रियता दर्शितहै। प्रियंवदा संवेदनशीला है, स्वभाव से कोमल, विश्वास करने वाली है। प्रियंवदा अपने नाम के अनुरूप गुणवाली तथा चन्द्रमा के समान शीतल है, जो मानवीय संवेदना की अनुभूति कराकर हृदय–वीणा के तंत्री के तारों को झंकृत कर देती है।

गौतमी

कालिदास ने गौतमी को कण्व मुनि की धर्म–भगिनी के रूप में 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' में चित्रित किया है। वह मुनि के प्रति कर्तव्यनिष्ठ तथा शकुन्तला के लिये शुभेक्षु तथा माता–तुल्य है। नाटक के तृतीय अंक में शकुन्तला की अस्वस्थता का समाचार लेने तथा उपचार के हेतु शान्ति जल लेकर आती है। गौतमी का चरित्र अपने आप में प्रभावशाली है, क्योंकि उनसे घबड़ा कर शकुन्लता दुष्यन्त को वृक्ष के पीछे छुपने को कहती है। अपनी दोनों सखियों के प्रति गौतमी से ही उलाहना देने की बात शकुन्तला कहती है। गौतमी आश्रम की प्रौढ़ महिला है। वह दूरदर्शी तथा सरल हृदया है। सभी आश्रमवासी उन्हें आदर देते हैं।

अन्य पात्र

अन्य स्त्री–पात्रों में चतुरिका, परभृतिका, मधुरिका, प्रतिहारी यवनी, सानुमती, अदिति आदि की भी नाटक में महत्त्वपूर्ण भूमिका दृष्टिगोचर होती है।

इस प्रकार महाकवि कालिदास विरचित तीनों ही रूपकों के अन्तर्गत स्त्री–पात्रों की बड़ी ही महत्त्वपूर्ण भूमिका है। इन स्त्री–पात्रों के माध्यम से जहाँ नाटकों की श्री–वृद्धि हो गई है वहाँ उसके गौरव का भी संवर्द्धन हो गया है। नाटकों की कथा–वस्तु, कथोपकथन, अभिनयेता आदि के प्रस्तुतीकरण में ये स्त्री–पात्र सर्वथा अपेक्षणीय है।

निष्कर्ष

कालिदास के रूपकों के कथानक में विभिन्न स्त्री–पात्रों का सन्निवेश किया गया है। प्रत्येक पात्र कानाटक की कथावस्तु में विशिष्ट महत्त्व है, किन्तु कतिपय स्त्री–पात्र इस प्रकार के दृष्टिगोचर होते हैं जिनके प्रवेश से प्रेक्षक के मानस पटल पर अमिट छाप पड़ती है। ऐसे पात्रों का प्रवेश पात्रों के चारित्रिक विकास के साथकथा के अर्थ के पल्लवन में भी चारुत्व का विधान होता है जिसके कारण पाठक वृन्द को रसास्वाद का सहजत्व स्वतः प्राप्त होताहै।

इन्हीं स्त्री–पात्रों के प्रवेष के निहितार्थ का सांगोपांग विवेचन करना मेरे प्रस्तावित आलेख का प्रतिपाद्य है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *महाकवि कालिदास, मालविकाग्निमित्रम्, 4/9.*
2. *डॉ0 रमाशंकर तिवारी, महाकवि कालिदास, पृ0 सं0 272.*
3. *धनंजय, दशरूपक, 2/19.*
4. *महाकवि कालिदास, विक्रमोर्वशीयम्, 1/6.*
5. *महाकवि कालिदास, विक्रमोर्वशीयम्, 1/10.*
6. *डॉ0 जयकिशन खण्डेलवाल, संस्कृत साहित्य का समीक्षात्मक इतिहास, पृ0 सं0 271.*
7. *महाकवि कालिदास, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, 1/25.*